Topic 33

दद दाने आदि अन्त आत्मनेपदी धातुएँ।

दद दाने। ददते।

न ससदद-वादि-गुणानाम्।

शसिददिवकारादीनां गुणशब्देन विहितो योऽकारस्तस्य च एत्वाभ्यासलोपौ न। ददद्दे। दददाते। ददिरे। ददिता। ददिष्यते। ददताम्। अददत। ददेत। ददिषीष्ट। अददिष्ट। अददिष्यत। त्रपूष् लज्जायाम्। त्रपते।

गुण शब्द से विहित अकार के स्थान पर ही एत्वाभ्यास-निषेध होता है। उदाहरण के लिए 'पेचे' शब्द के अकार में यद्यपि गुणत्व है, फिर भी गुण शब्द से विहित न होने के कारण यहाँ एत्व और अभ्यास लोप होजाता है।

तॄ-फल-भज-त्रपश्च।

एषामत एत्वमभ्यासलोपश्च स्यात् किति लिटि सेटि थलि च। त्रेपिता, त्रप्ता। त्रपिष्यते, त्रप्स्यते। त्रपताम्। अत्रपत। त्रपेत। त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट। अत्रपिष्ट, अत्रप्त। अत्रपिष्यत, अत्रप्स्यत। इत्यात्मनेपदिनः।

कित् लिट् और इट् सहित थल् परे होने पर तॄ, फल्, भज् और त्रप् धातुओं के अकार के स्थान पर एकार और अभ्यास का लोप होता है। उदाहरण के लिए

P.T.O

त्रप् धातु से लिट् लकार में प्रथमपुरुष एकवचन में 'त' प्रत्यय, एश् तथा अभ्यास कार्य होकर 'त्रप् प् ए' रूप बनता है। यहाँ पर कित् लिट् एकार परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से तकारोत्तरवर्ती अकार के स्थान पर एत्व तथा अभ्यास-पकार का लोप होकर 'त्रेपे' रूप सिद्ध होता है।